चन्दामामा

माँ-बच्चों का मासिक पत्र

बच्चों ! संसार में कौन ऐसा होगा जो सूरज को न जानता हो ? सूरज भगवान पूर्व की ओर एक किले में रहते हैं। वह हर रोज अपने सात घोड़े वाले रथ पर सवार होकर किले से निकलते हैं और आसमान के रास्ते पश्चिम की सैर करने जाते हैं।

सूरज भगवान का किला देखने में जितना सुन्दर है उतना ही मजबूत भी है। उनके किले के फाटकों पर मोतियों की झालरें झूलती हैं। एक सुन्दर देवी उन फाटकों पर पहरा देती रहती है। वही हर रोज सवेरे फाटक खोलती और फिर शाम को बन्द करती है।

उस देवी का सुनहरा आँचल हमेशा जगमग करता रहता है। उसके काले काले बाल हवा के झोंकों में लहराते रहते हैं। उसका रूप जितना सुन्दर है उतना ही अच्छा उसका स्वभाव भी है। इसलिए उस देवी को सब कोई प्यार करते हैं। सिर्फ देवता और मनुष्य ही नहीं ,

बहुत पशु-पक्षी भी उसे देखकर आनन्दित होते हैं।

उस देवी का एक ही काम था। सवेरे सूरज भगवान के निकलते वक्त फाटक खोलने और फिर बन्द कर देना। दिनभर उसे छुट्टी रहती थी। शाम तक वह जहाँ चाहे घूम सकती थी।

शाम को थके-माँदे सूरज भगवान पश्चिमी फाटक पर पहुँच जाते हैं न ! इसलिए उस देवी को शाम के वक्त जाकर किले का पश्चिमी फाटक खोलना पड़ता। यूँ वह दिन भर चाहे जहाँ कहीँ घूम ले, पर शाम होते ही

उसे लौटना पड़ता था। नहीं तो सूरज भगवान के लिए फाटक कौन खोलता ? शाम को फाटक बन्द करते ही फिर सवेरे तक उसे छुट्टी रहती।

फुरसत के समय वह देवी पृथ्वी पर उतर आती और यहाँ के जङ्गलों में ,पहाड़ों पर नदियों के किनारे घूमती फिरती। इस तरह शाम तक सैर सपाटे करके वह समय पर अपना काम करने चली जाती।

एक दिन जब वह इसी तरह पृथ्वी पर घूम रही थी ,तो उसे जङ्गल के राजा वनराज ने देख लिया। देखते ही वह उसे पर रीझ गया। ऐसी सुन्दर कन्या उसने पहले कभी नहीं देखी थी। उसने सोचा -"अगर इससे मेरा ब्याह हो जाए तो बड़ा अच्छा हो। " इसलिए उसने उस देवी को बुलाकर अपने मन की बात कही। वनराज की सुन्दरता देखकर वह देवी भी राजी हो गई। लेकिन दिक्कत यही थी की देवी को सुबह और शाम दोनों वक्त अपनी नौकरी बजानी पड़ती थी। इसलिए उसने वनराज से कहा-"मैं तुमसे ब्याह करने को राजी हूँ। मगर फुर्सत के वक्त ही तुम्हारे यहाँ रह सकूँगी। मनराज ने इसे मान लिया। तब से वह देवी रोज फुर्सत के समय आती और पति की सेवा करके चली जाती। एक दिन जब वह देवी अपने पति की सेवा करने पृथ्वी पर आई, तो उसने देखा कि उसका पति बीमार होकर नीचे जमीन पर पड़ा हुआ है। यह देखकर उसे बड़ा दुख हुआ। उसने सोचा -इस नौकरी के कारण ही पति की सेवा करने के लिए मुझे काफी समय नहीं मिलता। लेकिन मैं यह नौकरी छोड़कर

पृथ्वी पर रह भी तो नहीं सकती? इसलिए अगर मैं अपने पति को भी अपने साथ सूर्य-लोक ले जाऊँ, तो हमें बिछड़ना न पड़ेगा।

यह सोचकर दूसरे दिन उसने सूरज भगवान से कहा -"भगवन ! मेरे पति वनराज पृथ्वी पर रहते हैं। इससे मुझे उनकी सेवा के लिए काफी समय नहीं मिलता। अगर उनको भी मेरे साथ यहाँ रहने की इजाजत मिल जाए, तो बड़ा अच्छा हो। जब हम दोनों में बिछड़ने की नौबत न आएगी, तो हमें बहुत सुख होगा।"

सूरज भगवान ने खुशी से उसकी विनती मान ली। अब बनराज भी सूर्य लोक में रहने लगा। देवी को अब पृथ्वी पर उतरने की कोई जरूरत नहीं रही।

तुम तो जानते ही हो कि देवता लोग न कभी बूढ़े होते हैं न कभी मरते ही हैं। लेकिन वनराज तो पृथ्वी का निवासी था। जब देवी और वनराज को सूर्य-लोक में रहते बहुत दिन हो गए, तो वनराज पर बुढ़ापे के चिन्ह प्रकट होने लगे। देवी सूर्य-लोक की

रहने वाली थी। इसलिए वह पहले की तरह जवान ही बनी रही। तो भी उसने अपने बूढ़े पति की सेवा में कोई कमी न आने दी। वह पहले की तरह ही उसको प्यार करती रही।

धीरे-धीरे वनराज का मुँह पोपला हो गया आँखों की शक्ति भी जाती रही। सारे बदन पर झुर्रियाँ पड़ गई। आवाज काँपने लगी। अब वह बिना लाठी के दो कदम भी नहीं चल सकता था। एक दिन उसने अपनी पत्नी को बुलाकर कहा -"अब मैं ज्यादा दिन नहीं जीऊँगा । इसलिए मैं चाहता हूँ कि फिर पृथ्वी पर लौट जाऊँ और वहाँ हरी हरी मुलायम घास पर लेटकर अपनी आँखें मूँद लूँ । मेरे मन में यही एक साध बाकी रह गई है। इसलिए मुझे पृथ्वी पर पहुँचा दो।"

देवी ने सोचा कि पति की इच्छा पूरी करना उसका कर्तव्य है। इसलिए उसने कहा-"आपको सुख पहुँचाने के सिवा में और कुछ नहीं चाहती। अगर आप पृथ्वी पर जाना चाहते हैं, तो यह आपकी खुशी है। मैं आपको बुढ़ापे से नहीं बचा सकी। लेकिन मौत से बचा लेना चाहती हूँ। आप हरी घास पर लेट जाना चाहते हैं न ? अच्छा , मैं ऐसा उपाय करूँगी जिससे आप हमेशा हरी हरी घास पर सुख से बिचरते रहे। यह कहकर उसने अपने पति को पतिङ्गा बना दिया और पृथ्वी पर लाकर हरी घास पर छोड़ दिया। आज भी चाँदनी रातों में वह देवी अपने पति को देखने के लिए पृथ्वी पर उतर आती है। उसे देखते ही पतङ्ग आनन्द से प्रकाश की ओर उड़ने लगता है।
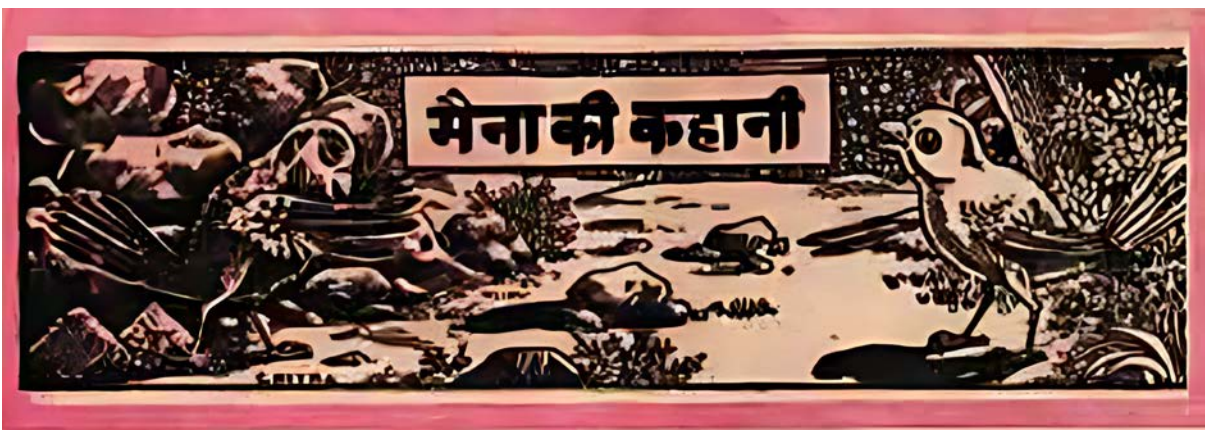
बच्चों ! साँवली सी मैना रानी तो तुमने देखा ही होगा। वह आठों पहर हमारे घर के चारों ओर झाड़ियां में और पेड़ों पर हो फुदकती रहती है। इसलिए सब लोग उसे जानते हैं।

मैं आज हमें साँवली सी दिखाई देती है। लेकिन पहले वह साँवली नहीं थी। पुराने जमाने में वह देखने में बड़ी सुन्दर थी। वह हंस से भी उजली धुली-पुती और साफ दिखती थी। शायद तुम पूछोगे कि फिर उसका रङ्ग साँवला क्यों हो गया ? सुनो, इसके बारे में एक मजेदार कहानी सुनाता हूँ --

एक दिन में मैना आसमान में उड़ रही थी कि उसने एक चट्टान पर बैठी हुई एक सुनहरी चिड़िया देखी। वह चिड़िया खिलती धूप में जगमगा रही थी। उसके सामने सोने चाँदी की ढेरियाँ लगी हुई थी जिन पर सूरज की किरणें चमक रही थी।

वह चिड़िया सबकी आँख बचाकर अपने सोने चाँदी के खजाने का हिसाब लगा रही थी। लेकिन अब मैना ने उसे देख लिया और उसका भेद खुल गया।

मैना क्यों चुप रहती ? उसने तरह-तरह के सवालों की झड़ी लगा दी -"दीदी ! तुम्हें यह सब सोना चाँदी कहाँ से मिल गया ? क्या कहीं से उठा लाई हो या किसी देवता ने खुश होकर दे दिया है ?"

वह सुनहरी चिड़िया अपना भेद किसी को बताना नहीं चाहती थी। कहो तो, अपने घर का भेद कौन खोलना चाहेगा ? लेकिन उसने सोचा -"अगर मैं मैना को यह भेद न बताऊँगी, तो वह जाकर सब पञ्छियों में ढिँढोरा पीट देगी। कहेगी कि इसने एक

खजाना छुपा रखा है। तब सब पञ्छी मेरे पीछे पड़ जाएँगे। इससे तो अच्छा है कि मैं इसी से यह भेद बता दूँ। बहुत होगा तो यह भी एक खजाना पा जाएगी। यह सोचकर उसने मैना से सैकड़ो कसम खिलवाई कि यह भेद वह किसी से नहीं कहेगी। इसके बाद उसने बताया -"देखो बहन ! उधर दूर पर एक पहाड़ की चोटी दिखाई देती है न !उसी के दक्षिण में एक खोह है। तुम निधड़क उस खोह में घुस जाओ। अन्दर जाते ही तुम्हें कमरा मिलेगा जिसमें चाँदी के ढेर लगे होंगे। लेकिन तुम उधर आँख उठा कर भी न देखना। थोड़ा और आगे जाने पर दूसरा कमरा मिलेगा जिसमें सोने के ढेर लगे होंगे। तुम उसमें भी हाथ न लगाना। तीसरे कमरे में तुम्हें हीरे जड़े हुए सोने के सिंहासन पर बैठा खोह का राजा मिलेगा। तुम उसके सामने घुटने टेक कर जो कुछ भी माँगोगी, मिल जाएगा।

यह सुनना था कि मैना सीधे उस पहाड़ी की ओर उड़ी और पलक मारते-मारते उस गुफा में जा पहुँची। कुछ दूर जाने पर चाँदी के खजाने वाला कमरा मिला। चाँदी के ढेर देखते ही उसका मन ललचा गया। लेकिन इस वक्त सुनहरी चिड़िया की हिदायत याद आ गई और उसने अपने आप को रोका। कुछ और आगे जाने पर उसे सोने का खजाना दिखाई पड़ा। उस पर नजर पढ़ते ही मैना सारी सुध-बुध भूल गई। चिड़िया की बातें न जाने कहाँ हवा हो गई। किसी न किसी तरह वह सोना उठा ले जाना चाहिए, यह सोचकर उसने सोने की ढेरी में चोञ्च मारी।

सोने की ढेरी में मैना की चोञ्च लगते ही उसमें से एक भयङ्कर भूत उठ खड़ा

हुआ। उस भूत के नथुनों से घू-घू करती आज की लपेटें निकल रही थी। बात की बात में वह कमरा धुएँ से भर गया और मैना का दम घुटने लगा।

"तुम कौन हो ? इस कमरे में क्यों घुस आई हो ? क्या तुमको मालूम है कि यह सोने का खजाना किसका है ? अगर मालूम है तो फिर इस पर चोञ्च क्यों चलाई ? बोलो जल्दी !जवाब दो ! वरना देखोगी की अभी तुम्हारा क्या हाल होता है। " भूत ने डपट कर पूछा।

थर-थर काँपती हुई मैना ने सारा हाल सच-सच कह सुनाया। कैसे सुनहरी चिड़िया से उसकी भेंट हुई। कैसे उसको यह भेद मालूम हुआ और कैसे वह कमरे में आने पर उसके मन में लालच पैदा हुआ। इत्यादि इत्यादि। उसने रोते-रोते यह सब कह सुनाया।

"पूछते ही तुमने सच्चा-सच्चा हाल बता दिय। इसलिए मैं तुम्हें अभी माफ कर देता हूँ । लेकिन तुम्हें लालच का फल तो भुगतना ही पड़ेगा। जाओ , अब कभी ऐसा काम न करना। " यह कहकर भूत ने मैना को कमरे से बाहर निकाल दिया। बाहर जाकर देखने पर मैना को मालूम हुआ कि उसका हंस का सा उजला शरीर काला हो गया है। लेकिन उसने सोने की ढेरी में चोञ्च मारी थी। इसलिए उसकी चोञ्च में सोना लग गया और वपीली बन गई। देखा तुमने ! मैना के लालच का फल क्या हुआ!

सुनहरी चिड़िया को डरा धमका कर भेद जान लेना उसकी पहली भूल थी। जान लेने के बाद भी लालच के मारे उसकी हिदायद भूल जाना और सोने की ढेरी पर चोञ्च लगाना उसकी दूसरी भूल थी। इसलिए भूत को गुस्सा आ गया और उसकी दूध सी देह झुलस कर काली हो गई।

फिर भी खैरियत इसी में थी कि उसकी जान बच गई।

किसी जमाने में एक राजा था। उसकी दो रानियाँ थी। बहुत दिनों बाद बड़ी रानी से एक लड़की पैदा हुई। लेकिन छोटी रानी की कोई सन्तान न हुई। जब बड़ी रानी की लड़की सयानी हुई, तो उसकी सुन्दरता की चर्चा सुनकर दूर-दूर के राजकुमार उस से ब्याह करने के लिए आने लगे। लेकिन छोटी रानी कोई ना कोई उपाय रचकर सबको निराश कर देती थी। राजा भी उसकी बात नहीं टालता था। इसलिए राजकुमारी का ब्याह नहीं हो सका।

अपनी सौतेली लड़की को और भी कष्ट देने के लिए छोटी रानी ने एक उपाय सोचा। एक दिन उसने राजा से जाकर कहा -"देखिए, ऐरे-गैरे-नत्थू-खैरे सभी राजकुमारी से शादी करने चले आते हैं। यह ठीक नहीं। राजकुमारी के लिए योग्य वर की खोज करनी चाहिए। इसके लिए मुझे एक उपाय सूझ गया है। आप जमीन के अन्दर एक महल बनवाइए। उस महल से लेकर हमारे बाग तक एक सुरङ्ग खुदवा दीजिए। हमारे बाग़ के कोने में एक तालाब है न! उस तालाब में उस सुरङ्ग का दरवाजा लगाइए। तालाब में हमेशा पानी भरा रहेगा। इसलिए किसी को उस महल का पता नहीं चलेगा। राजकुमारी को उसे महल में रख दीजिए और ढिँढोरा पिटवा दीजिए कि जो राजकुमारी का पता लगाएगा वही उसे ब्याह कर सकेगा। जो इस काम में असफल होगा उसका सिर काटकर किले के कंगूरे पर लटका दिया जाएगा।

राजा ने उसकी यह बात मान ली और उसी प्रकार सब इन्तज़ाम कर दिया। अब वह गुप्त महल बनकर तैयार हो गया तो राजकुमारी उसमें छुपा दी गई। फिर चारों ओर ढिँढोरा पीट दिया गया कि

जो राजकुमारी का पता लगाएगा वही उसे ब्याह कर सकेगा। यह खबर सुनकर दुनिया के सभी देशों के बहुत से राजकुमार उससे शादी करने आए। लेकिन कोई नहीं जान सका की राजकुमारी कहाँ छिपी हुई है और बेचारों के सिर काटकर किले के कंगूरे पर लटका दिए गए।

कहीं पड़ोस के एक देश में एक राजा रहता था। उसके तीन लड़के थे। यह ढिँढोरा सुनकर उनमें से बड़े लड़के ने एक दिन अपने पिता के पास जाकर कहा-"पिताजी !हमारे पड़ोसी राजा की लड़की किसी गुप्त स्थान में छुपा दी गई है और ढिँढोरा पीट दिया गया है कि जो उसका पता लगाएगा उसी के साथ उसका ब्याह होगा। मैं जाकर उस राजकुमारी का पता लगाना चाहता हूँ। उस राजकुमारी से ब्याह करने से मेरा नाम सारे संसार में फैल जाएगा। इसलिए मैं आपकी इजाजत चाहता हूँ। "

तब उसके पिता ने कहा -"बेटा ! क्यों नाहक अपनी जान गँवाना चाहते हो ? किस हत्यारे ने तुझे यह बात सुझाई ? न जाने कितने राजकुमार उस राजकुमारी का पता लगाने गए उनमें से एक भी लौटकर

नहीं आया। तुम उस राजकुमारी का ख्याल अपने मन से निकाल दो। मैं तुम्हें उससे बड़ी-चढ़ी सैंकड़ों राजकुमारियाँ ला दूँगा।"

लेकिन वह राजकुमार अपने पिता की बात क्यों सुनाने लगा ? उसके सिर पर तो काल सवार था। वह हठ करके राजकुमारी का पता लगाने चला। उसे इस काम के लिए तीन दिन की मोहलत दी गई। लेकिन जब तीन दिन बीत गए और राजकुमारी का पता नहीं लगा, तो उसका सिर काटकर किले के कंगूरे पर लटका दिया गया।

जब यह खबर उसके मँझले भाई ने सुनी तो उसने भी राजकुमारी से शादी करने की

ठानी। पिता के बहुत मना करने पर भी वह हठ करके रवाना हुआ। लेकिन वह भी राजकुमारी का पता ना लग सका और उसका भी वही हाल हुआ।

सबसे छोटे भाई ने यह खबर सुनी तो उसने भी राजकुमारी से ब्याह करना चाहा। उसके दुखिया माँ-बाप ने उसे बहुत रोका। लेकिन उसने एक न सुनी। वह भी राजकुमारी से शादी करने चल पड़ा।

यह छोटा राजकुमार बड़ा बुद्धिमान और दूरदर्शी था। जाते समय वह एक शहर में पड़ाव डालकर वहाँ के एक नामी सुनार के घर गया। उसने उसे बहुत सा सोना देकर एक बड़ा सुन्दर सोने का खोखला भेड़ा बनवाया। जब भेड़ा बनकर तैयार हो गया तो राजकुमार ने उसे सुनार को अच्छा इनाम देकर कहा - "तुम्हारी कारीगरी देखकर मुझे बड़ी खुशी हुई। अब तुम यह सोने का भेड़ा राजा के पास ले जाओ और कहो कि यह भेड़ा राजकुमारी के लिए एक राजकुमार ने भेंट में दिया है। " सुनार ने उसकी बात मान ली।

जब अन्धेरा हो गया तो राजकुमार ने सब की आँख बचाकर उसे भेड़े को खोला और उसमें घुसकर उसे बन्द कर लिया।

दूसरे दिन जब सुनार उस भेड़े को राजा के पास ले गया ,तो राजा उसे देखकर बहुत खुश हुआ। उसने सुनार को खूब इनाम दिया। उसने उस भेड़े को गुप्त महल में राजकुमारी के पास पहुँचा दिया।

वह सुन्दर भेड़े को देखकर राजकुमारी फूली न समयी। उधर भेड़े में छुपा हुआ राजकुमार छोटे छेद से राजकुमारी की सुन्दरता देखकर मन में अचरज कर रहा था। नौकर राजकुमारी के लिए रोज खाना लाकर एक चौकी पर रख जाता था। जब राजकुमार को भूख लगती तो वह उसे भेड़ में से

से निकाल कर चुपके से राजकुमारी का खाना खा जाता और फिर अपनी जगह छिप जाता। जब दो-तीन बार ऐसा हुआ तो राजकुमारी को बड़ा अचरज हुआ। वह एक रात सोने का बहाना करके जागती रही और इस तरह चोर को पकड़ लिया।

उस राजकुमार का रूप देखकर राजकुमारी मोहित हो गई। उसने मन ही मन निश्चय किया कि उसको छोड़कर वह किसी और से ब्याह नहीं करेगी। अब दोनों ने मिलकर एक उपाय रचा। राजकुमारी ने उसे भेड़े का एक कान तोड़ दिया और मरम्मत के लिए अपने पिता के पास भिजवा दिया। राजा ने भेड़े को सुनार के यहाँ भेज दिया। राजकुमार तो उसमें छिपा ही था। सुनार के घर जाने के बाद वह निकल पड़ा और सीधा राजा के पास जाकर बोला -"मैं आपकी बेटी से ब्याह करने आया हूँ। " यह सुनकर राजा ने उसे बहुत समझाया -"क्यों नाहक अपनी जान गवाते हो ? तुम्हारे दो भाई तो मारे गए। मेरी बात मानो और घर लौट जाओ।" लेकिन राजकुमार ने उसकी एक न सुनी। तब लाचार होकर राजा ने कहा -"अच्छा, तो जाओ। पहले राजकुमारी का पता लगाओ। "

राजकुमार टहलते टहलते बाग की तरफ चला जैसे वह कुछ जानता ही न हो। लेकिन छोटी रानी चुपके से उसका पीछा कर रही थी। तब राजकुमार ने तालाब के पास जाकर राजा को बुलवाया और कहा -"पहले इस तालाब का पानी निकलवा दीजिए। " राजा ने थोड़ा आगा-पीछा किया। लेकिन आखिर लाचार होकर तालाब का पानी निकलवा दिया।

अब तो सुरङ्ग का दरवाजा साफ-साफ दिखाई देने लगा। राजकुमार ने दरवाजा खुलवाया। सीढ़ियों से नीचे उतरने पर गुप्त महल दिखाई देने लगा। छोटी रानी ने देखा

कि सारा भेद खुल गया तो उसने आगे जाकर कहा -"राजकुमार! पाँच मिनट के लिए तुम रुक जाओ। मैं जाकर राजकुमारी को तुम्हारे आने की खबर दे दूँ। "

महल के अन्दर जाकर छोटी रानी ने और एक चाल चली। उसने राजकुमारी की सभी सखियों को उसकी सी पोशाक पहना दी जिससे राजकुमार राजकुमारी को पहचान न सके। फिर उसने राजकुमार को अन्दर ले जाकर कहा -"बेटा ! जब तुम इनमें से अपनी राजकुमारी को पहचान लोगे, तभी तुम्हारी शादी हो सकेगी। नहीं तो जो नतीजा होगा वह तुमको मालूम ही है। "

राजकुमार अपनी राजकुमारी को आसानी से पहचान सकता था। तो भी उसने अपनी चालाकी दिखाने के लिए एक उपाय किया। उसने अपनी जेब से मुट्ठी भर अशर्फियाँ निकाल कर फर्श पर भी बिखेर दी। लड़कियाँ सब उसे पर टूट पड़ी। अकेली राजकुमारी चुपचाप खड़ी रह गई। बस राजकुमार ने उसका हाथ पकड़ लिया।

राजा को इस राजकुमार की होशियारी देखकर बड़ी खुशी हुई। कुछ ही दिनों बाद बड़ी धूमधाम के साथ दोनों का ब्याह हो गया।

अब तक उस राजकुमारी से ब्याह करने की कोशिश में निन्यानबे राजकुमारों के सिर किले की दीवार पर लटक चुके थे। अगर छोटी रानी की चाल चलती, तो इस राजकुमार का सिर भी उसमें जोड़ देती और सौ की संख्या पूरी कर देती। लेकिन उसकी कोशिश बेकार गई। अब राजा का मन भी उसे फिर गया था। अगर राजकुमार न रोकना तो राजा उसे मरवा भी डालता। लेकिन राजकुमार तो उसकी तरह इस ईर्ष्यालु नहीं था न !

पुराने जमाने की बात है। चीन में 'यङ्ग लो' नामक राजा राज करता था। उस समय पैकिंग शहर चीन की राजधानी था। उसे शहर में बड़े-बड़े आलीशान महल थे।

कुछ दिन के बाद राजा 'यङ्ग लो' के मन में आया कि एक ऐसा घण्टा बनवाना चाहिए जिसकी आवाज सारे शहर में सुनाई दें। ऐसा घण्टा ऊँची मीनार से लटका दिया जाएगा तो शहर की रौनक और भी बढ़ जाएगी। इस काम में चाहे जितना भी खर्च हो, कोई परवाह नहीं। घण्टा तो बनवाना ही चाहिए।

यह सोचकर उसने अपने दरबारियों को बुलवाया और हुकुम दिया -"मैं एक बड़ी ऊँची मीनार बनवाकर उसे पर एक बड़ा भारी घण्टा लटका देना चाहता हूँ। यह घण्टा संसार में सबसे बड़ा और शानदार हो। जब यह घण्टा बजे तो सारे शहर में दूर-दूर तक इसकी "टन-टन" आवाज साफ सुनाई दें। इसके लिए अगर जरूरत पड़े तो मैं अपना सारा खजाना लुटा देने को तैयार हूँ। जाओ, तुम लोग देश के कोने-कोने से ढूँढ कर एक ऐसा कारीगर ले आओ जो यह शानदार घण्टा बना सके। मैं उसे कारीगर को मुँह माँगा इनाम दूँगा।

बादशाह के हुकुम के मुताबिक सारे मुल्क में ढिँढोरा पीट दिया गया। दरबारी लोग चारों ओर कारीगरों की खोज करने लगे। बहुत दिन के बाद आखिर उन्हें ऐसा कारीगर मिला जिसने इसका बीड़ा उठाया। उसका नाम था "कुवान यू"। वह एक मशहूर लोहार था। चीन देश के बहुत से लोग उसे जानते थे। "कुवान यू" ने आकर बादशाह से मुलाकात की। मामला तय हो गया। बादशाह भी ऐसा होशियार कारीगर प्रकार बड़ा खुश हुआ।

बादशाह ने "कुवान यू" के हाथ में काफी रुपया रख दिया। उसके मातहत काम करने के लिए बहुत से कारीगर नियुक्त हुए। घण्टे के लिए एक बड़ा भारी साँचा तैयार किया गया। जब गली हुई धातु साँचे में ढालने का दिन आया, तो बादशाह अपने दरबारी के साथ तमाशा देखने आया।

पर "कुवान यू" की बदनसीबी तो देखो ! गली हुई धातु साँचे में डालते ही साँचा टूटकर टुकड़े-टुकड़े हो गया। जमीन पर गली हुई धातु के पनाले बह निकले। वर्षों की मेहनत और अपार धन इस तरह बेकार होते देख "कुवान यू" के दुख का ठिकाना न रहा। लेकिन बादशाह ने उसको दिलासा देते हुए कहा - "कुवान यू, तुम कुछ भी सोच न करो। जो होना था , सो हो गया। बड़ों से भी कभी ना कभी भूल चूक हो ही जाती है। तुम एक बार हार गए तो क्या हुआ ? फिर से कोशिश करो।।इस बार जरुर सफल हो जाओगे। रूपए पैसे की कुछ चिन्ता न करो। " यह कहकर बादशाह फिर से सब इन्तज़ाम करके अपना महल को लौट गया।

आखिर "कुवान यू" ने किसी तरह फिर हिम्मत बाँधी और बरसों पोथी-पत्रे उलटने के बाद फिर एक बार कोशिश की। इस बार धातु को गला कर साँचे में डालते वक्त बादशाह उनके दरबारी और भी बहुत से लोग तमाशा देखने आए। इस बार साँचा नहीं टूटा। लेकिन जो घण्टा तैयार हुआ ,वह चलनी की तरह छेद से भरा हुआ था।

इस तरह दूसरी बार भी वर्षों की मेहनत और बहुत सारा रुपया मिट्टी में मिलते देखकर बादशाह को बड़ा गुस्सा आया और

उसने कुवान से कहा -"देखो, मैं तुम्हें और एक मौका देता हूँ। अगर तुम इस बार भी सफल न हुए तो मैं तुम्हारी बोटी-बोटी उड़ा दूँगा। समझे ?"

कुवान ने उन्हें घर जाकर सारे पोथी-पत्रे फिर से उलटे लेकिन उसे कोई नई तरकीब न सूझी। घण्टा तो उसे बनाना ही था। लेकिन इस बार भी फिर वही हुआ तो ? वह और आगे न सोच सका। उसने अपनी प्यारी कोवाय को बुलाकर सारा हाल कह सुनाया और यह भी बता दिया कि अब सिर्फ मौत की घड़ियाँ गिनते रहना बाकी रह गया है।

उसकी बेटी कोवाय का रूप कितना सुन्दर था गुण उससे कहीं बड़े-चढ़े थे। वह अपने पिता से बहुत प्यार करती थी। पिता पर यह सङ्कट आया देख उससे बड़ा दुख हुआ। आखिर वह सोच विचार कर घर से बाहर निकली और वही नजदीक की पहाड़ियों पर रहने वाले एक साधु के पास गई। यहाँ उसने साधु के पैरों पड़कर बड़ी दीनता के साथ सारा हाल कह सुनाया। साधु ने उसे पर तरस खाकर कहा -"बेटी ! तुम्हारे पिता ने घण्टा तैयार करने में कोई गलती नहीं की। पोथी-पत्रे

पलट पलट कर उन्होंने जो हिसाब लगाया उसमें भी कोई भूल चुक न थी। घण्टे के फूटने का कारण कुछ और ही था। हर एक बड़ा कार्य करते समय कुछ ना कुछ बलि देनी चाहिए। इस घण्टे की गली हुई धातु में जब तक एक शीलवती कन्या का लहू नहीं मिलाया जाएगा, तब तक घण्टा बनाने का यह प्रयत्न सफल नहीं होगा।" साधु से इतना जानकार कोवाय बड़े उत्साह के साथ घर लौट आई और अपने पिता के पास जाकर बोली -"पिताजी ! आपको चिन्ता न कीजिए। इस बार आप अपनी कोशिश में जरूर कामयाब हो जाएँगे। इस बार घण्टा

ठीक ठीक उतरेगा। राजा भी खुश होकर आपको बहुत से इनाम देंगे। आपका यश सारे चीन देश में फैल जाएगा। बेचारे कुवान यू को क्या मालूम कि उसकी बेटी इतने विश्वास के साथ क्यों बोल रही है ? उसे क्या खबर थी कि उसकी बेटी के मन में क्या है ? फिर भी उसे उस पर बड़ा विश्वास था और वह जानता था कि वह कभी झूठ नहीं बोलती। इसीलिए फिर उसने घण्टा ढालने की तैयारी कर दी। जब वह दिन आया तो बहुत लोग तमाशा देखने आए।

जब गली हुई धातु साँचे में डाली जा रही थी, तो लोगों के बीच में कोई खलबली सी मच गई। उस समय कुवान यू साँचे के नजदीक खड़ा था। उसने देखा कि उसकी बेटी भीड़ को चीरती हुई उसकी और आ रही है। वह कहना ही चाहता था कि -"बेटी! यहाँ लौ लगती है। तुम अहाँ मत आओ।" इतने में वह दौड़कर उस विशालकाय साँचे में कूद पड़ी। कुवान ने हाथ फैलाकर उसे पकड़ना चाहा। लेकिन सिर्फ उसके बाएँ पैर की जूती ही उसके हाथ आई। देखते ही देखते कोवाय खोलती हुई धातु में गल गई। किसी को इसका रहस्य नहीं मालूम हुआ।

यों घण्टा तैयार हो गया। लेकिन प्यारी बेटी को खोकर कुवान यू की दुनिया अन्धेरी हो गई।

आज भी जब उस महानगर में यह घण्टा बजाता है तो उसकी टन-टन की आवाज "पे" ,"पे" कह कर पुकारती है। चीनी भाषा में "पे" शब्द का माने होता है "जूता"। इसलिए जब-जब वह घण्टा बजाता है तो लोग आपस में रहते हैं -"देखो, वह कुवान यू की लड़की अपना जूता माँग रही है।

कोवाय ने अपनी जान गवा कर भी पिता की इज्जत रख ली। इसी से इसका नाम अमर हो गया।

किसी गाँव में विश्वासी नामक एक गरीब आदमी रहता था। मुद्दत के बाद जब उसके एक लड़की पैदा हुई तो उसने उसका नाम "मुन्नी" रखा और बड़े लाड प्यार के साथ पालने लगा।

उसकी औरत ने ऐड़ी-चोटी का पसीना एक करके कुछ रुपए कमाए और उनसे एक अशर्फी खरीदी। एक दिन उसने वह अशर्फी अपने पति के हाथ देकर कहा -"जाइए, किसी सुनार के पास जाकर इस अशर्फी से हमारी मुन्नी के लिए वालियाँ बनवा लाइए। विश्वासी सुनार के घर चला।

उसे गाँव के जमीन्दार का नाम रामपाल सिंह था। बाबूराम पाल सिंह की स्त्री बड़ी भली औरत थी वह दीन दुखियों की बड़ी सहायता करती थी।

विश्वासी सुनार के घर जा रहा था। पर बीच में रामपाल सिंह ने उसे देख लिया और बुलाकर गपशप करने लगे। बैठक खाने में दरी बिछी हुई थी। उन्होंने विश्वासी को उस पर बैठ जाने को कहा और खुद गद्दे पर बैठकर गाँव का हाल-चाल पूछने लगे। इतने में उनकी स्त्री उनकी तीन साल की छोटी लड़की को ले आई और वहाँ बिठाकर चली गई। उस लड़की के हाथ में सोने के कङ्गन देखकर विश्वास ही मन ही मन सोचने लगा - "अगर हमारी मुन्नी के हाथों में भी ऐसे ही कङ्गन होते तो कितना अच्छा होता !"

इतने में जमीन्दार की स्त्री अन्दर से घबराई हुई आई और चारों ओर ऐसे ढूँढने लगी जैसे कोई चीज खो गई हो। जब जमीन्दार साहब ने पूछा कि क्या खोज रही हो, तो उसने बताया लड़की रो रही थी इसलिए उसका मन बहलाने के लिए मैंने उसके हाथ में दो सोने की अशर्फियाँ रख दी थी। लेकिन

अब खोजने पर एक ही दिखाई देती है; दूसरे का पता नहीं चलता।

इतना सुनते ही जमीन्दार साहब ने विश्वासी से पूछा -"क्यों विश्वासी ? कहीं यह भूल से तुम्हें तो नहीं मिली ?" अब तो विश्वास ही पशो-पेश में पड़ गया। जमीन्दार साहब की एक अशर्फी खो गई है। तिस पर वह ठहरा गरीब आदमी। अशर्फी भी ठीक उसकी मौजूदगी में खो गई है। इसलिए जमीन्दार साहब को अगर उस पर शक हो भी गया; तो उसमें अचरज की कोई बात नहीं। इतना ही नहीं, उसकी जेब में ठीक एक ही अशर्फी है। अब वह लाख कहे कि उसने अशर्फी नहीं ली; तो भी कोई उस पर यकीन नहीं करेगा। इसलिए उसने सोचा कि अपनी अशर्फी जमीदार साहब को दे दे और कह दे कि आपकी अशर्फी मैंने ही ले ली थी। लेकिन तब उसकी लाडली मुन्नी के लिए वालियाँ कहां से आएँगे ? लौटकर वह अपनी पत्नी को क्या जवाब देगा? इस तरह बड़ी देर तक विश्वासी के मन में उथल-पुथल मचती रही। आखिर उसने अपनी अशर्फी निकाल कर जमीन्दार साहब के हाथ में रख दी और उदास मन से घर लौट आया। विश्वासी की स्त्री बार-बार उससे पूछती -"कहिए, क्या वालियाँ तैयार हो गई ? अब तक जरूर बन गई होंगी। जाकर सुनार के यहाँ से ले क्यों नहीं आते ?"

विश्वासी कोई ना कोई बहाना करके टाल देता। इस तरह कुछ दिन बीत गए। इतने में एक दिन संयोगवश वह सुनार उसी राह से जा रहा था। उसे विश्वासी की स्त्री ने देख लिया। वह तुरन्त उसे बुलाकर डपटने लगी की "वालियाँ बनाने में तुमने इतने दिन क्यों लगा दिए ?" बेचारा सुनार भौंचक्का रह गया। वह क्या जाने ? उसने साफ-साफ कह दिया "कैसी वालियाँ ? मुझे तो किसी ने

रत्ती भर भी सोना नहीं दिया है। विश्वासी जब वहाँ आया तो उसने देखा कि भाण्डा फूट गया। अब बहाने बनाने से काम नहीं चलने का। तब उसने उस दिन जमीन्दार के घर जो घटना घटी थी, उसका पूरा किस्सा सुना दिया। सुनते ही उसकी स्त्री पछाड़ खाने लग गई।

एक दिन जमीन्दार साहब की स्त्री को आँगन बुहारते वक्त कोने में रखे धान के बोरों के नीचे एक अशर्फी मिली। उसे बड़ा भारी अचरज हुआ। उसने जल्दी से जाकर अपनी सन्दूक खोली और अपनी अशर्फियाँ गिनी। उसने सोचा -"मेरी अशर्फियाँ कुल चौदह थीं। सन्दूक में अब भी वहीं चौदह है। उस रोज विश्वासी ने एक अशर्फी ले ली थी। लेकिन उसने फिर तुरन्त लौटा दी थी। फिर बोरों के नीचे यह अशर्फी कहां से आ गई ?" तब उसने अपने पति के पास जाकर यह बात कह सुनाई। उसने भी सभी अशर्फियाँ हाथ में लेकर उलट-पुलट कर देखे। तेरह अशर्फियाँ १८३० की थी लेकिन चौदहवीं अशर्फि १८४० की थी। तब जमीन्दार साहब ने कहा -"हमने चौदहों अशर्फियाँ एक ही बार खरीदी थी और सब एक ही साल की

थीं। ये तेरहों अशर्फियाँ हमारी है; लेकिन यह चौदहवीं किसी और की है।"

तब उसकी स्त्री के मन में यह ख्याल हुआ कि हो न हो यह विश्वासी की अशर्फी है। उसी ने तो उस दिन अपनी जेब से एक अशर्फी निकाल कर दी थी। बस, उसने तुरन्त विश्वासी को बुला भेजा। बेचारा रोनी सूरत लिए वहाँ आया तो जमीन्दार की स्त्री ने उससे पूछा- "सच बताओ। उस दिन तुमने जो अशर्फी अपनी जेब से निकाल कर दी थी, वह किसकी थी ?" सुनते ही बेचारा सहम गया कि न जाने अब कौन सी वला

सिर पड़ने वाली है। तब जमीन्दार की स्त्री ने उसे धीरज बँधा कर कहा -"सच बोलो। डरने की कोई बात नहीं। " तब बेचारे ने रोते-रोते सारा किस्सा कह सुनाया। सुनकर जमीन्दार की स्त्री बहुत पछताने लगी-"अरे ! हमने अकारण ही एक सच्चे आदमी पर शक किया और उसके मन को इतना कष्ट पहुँचा। बेचारा मन ही मन कितना कलपा होगा ! उसने वह अशर्फी विश्वासी को लौटा दी। अशर्फी लेकर वह खुशी-खुशी घर चला गया।

एक हफ्ता बीत गया। अचानक एक दिन विश्वासी को जमीन्दार साहब के घर से खबर आई कि स्त्री और बच्ची को साथ लेकर तुरन्त आओ। अब विश्वासी उनके घर जाने से डरता था। न जाने कौन सी आफत सिर पर आ जाए ! लेकिन करता क्या ? जमीन्दार का हुक्म टाला भी तो नहीं जा सकता था।

आखिर वह डरते डरते अपनी स्त्री और बच्ची को साथ ले जमीन्दार के घर गया। जाकर उसने देखा कि वहां जमीन्दार और उसकी स्त्री के अलावा सुनार भी बैठा हुआ है। सुनार ने एक छोटी सी पोटली जमीन्दार की स्त्री के हाथ में दे दी। जमीन्दार की स्त्री ने विश्वासी की स्त्री के हाथ से मुन्नी को ले लिया और अपने पास बिठा लिया। फिर उसने वह पोटली खोलकर तरह-तरह के जेवर निकले और अपने हाथों से मुन्नी को पहना दिए। मुन्नी के पैरों में कड़े, हाथों में कङ्गन , गले में हार, कानों में वालियाँ और उँगलियों में अँगूठियाँ चमक रही थी।

जेवर पहनकर जब मुन्नी उछलने कूदने लगी, तब सबका हृदय आनन्द से भर गया। विश्वासी ने सोचा -"भगवान जब दुख देते हैं, तब उसके हाथ सुख भी लगा देते हैं। "

एक दिन ब्रह्मा जी एक बूढ़े के वेश में गङ्गा किनारे बैठे हुए थे और वहाँ जमीन पर उगे हुए कुछ के अङ्कुर उखाड़ उखाड़ कर गाँठे डाल रहे थे। ऊपर से जाते हुए एक ब्राह्मण युवक ने उस विचित्र बूढ़े को देखकर कहा -"क्यों दादा जी ! आप यह क्या कर रहे हैं ? क्या आपको कोई दूसरा काम नहीं सुझा जो यहाँ बैठे-बैठे तीनके जोड़कर गाँठे लगा रहे हैं ?"

तब ब्रह्मा जी ने सिर झुका कर उसी तरह अपना काम करते हुए जवाब दिया -"बेटा ! यह मामूली गाँठे नहीं है। ब्रह्मा की गाँठे हैं। समझ लो की काशी में एक लड़की है और रामेश्वर में एक लड़का; गया में एक लड़की है और द्वारका में एक लड़का। मैं काशी और गया की लड़कियों और रामेश्वर और द्वारका के लड़कों के बीच गठबन्धन करता हूँ और वह जीवन भर के लिए एक दूसरे से बँध जाते हैं। दोनों का ब्याह हुए बिना नहीं रह सकता। ये वही विधि की गाँठे हैं भई !"

यह सुनकर ब्राह्मण युवक को और भी अचरज हुआ और उसने उस बुद्ध को चिढ़ाने के लिए कहा -"वाह ! वह ! तो तुम काशी की लड़की और रामेश्वर के लड़के में मनमानी गाँठ डाल देते हो और वह पति-पत्नी बन जाते हैं। क्या सिर्फ तुम्हारे कहने से मैं इस बात पर यकीन कर लूँ ? अच्छा, तो बताओ देखे मेरा ब्याह किसी लड़की से होने वाला है ?"

तब उस बुद्ध ने मुस्कुराते हुए कहा - "तो मैं झूठ थोड़ी बोल रहा हूँ ? इसी

पी. भानुमती

को होनहार कहते हैं बेटा। अगर मेरी यह गाँठे खुल गई तो संसार ही नष्ट हो जाएगा। तुम मेरी बातों पर विश्वास करो।" यह कहते हुए उसने पहले से डाल कर रखी हुई एक गाँठ निकाली और युवक को दिखाकर कहा -"हरिद्वार के निकट एक अछूत-टोले में भगतराम नामक एक चमार रहता है। उसी की लड़की से तुम्हारी शादी होने वाली है। यही तुम्हारे भाग्य में लिखा है।"

यह सुनकर युवक को बड़ा गुस्सा आया। उसने उस बूढ़े को भला बुरा कहते हुए यह प्रतिज्ञा की -"अच्छा ! तो मैं भी देखूँगा कि तुम्हारे इन गाँठों में कितना बाल है ! तुम चमार की लड़की से मेरा ब्याह करवाओगे ? क्या खूब ! तो सुन लो। अगर मैं ब्राह्मण की लड़की से शादी न की तो मेरा नाम श्रीराम शर्मा नहीं।" यह कहते हुए वह ब्राह्मण युवक तमतमाता हुआ वहाँ से चला गया। उसको इस तरह गुस्सा करते देखा बूढ़ा मन ही मन खूब हँसा।

घर पहुँचने के बाद श्रीराम शर्मा के मन में चिन्ता पैदा हो गई। उसे बूढ़े की बातों पर विश्वास तो न था। लेकिन न जाने क्यों उसका मन घबरा रहा था। आखिर बहुत देर तक सो विचारने के बाद वह हरिद्वार की ओर रवाना हुआ।

वहाँ पहुँचकर पूछताछ करने पर उसे मालूम हुआ कि अछूत-टोले में सचमुच ही भगतराम नाम का एक चमार है और उसकी एक लड़की भी है।

अब तो शर्मा और भी घबरा गया। उसे न सूझा कि क्या किया जाए। आखिर उसने सोचा किसी न किसी उपाय से इस

लड़की को मरवा कर गङ्गा में बहा दिया जाए तो मेरी वला टल जाएगी और बूढ़े की बात झूठी हो जाएगी। यह सोचकर उसने उसे गाँव की चौकीदार को बुलाकर उससे काना-फूसी की -"अगर तुम भगतराम की लड़की को मार कर गङ्गा में बहा दो, तो मैं तुम्हें मुँह - माँगा इनाम दूँगा।"

इनाम का नाम सुनते ही चौकीदार का मन ललचा गया। लेकिन उसने जब सोचा कि इसके लिए एक बेगुनाह लड़की की हत्या करनी होगी, तो वह पशो-पेश में पड़ गया। उससे न इनाम का लालच छोड़ते बनता था और न उसका मन हत्या करने के लिए ही राजी होता था। आखिर बहुत सोच विचार कर उसने एक ऐसा उपाय निकाला जिससे उसे इनाम मिल जाए; पर हत्या का पाप न लगे। उसने एक काफी बड़ी बाँस की टोकरी बनवाई। फिर एक रात को वह सब की आँख बचाकर बड़ी होशियारी से भगतराम के घर से उसकी लड़की को उड़ा लाया।

फिर उसने उस लड़की को टोकरी में लिटा दिया और ले जाकर शर्मा

को दिखा दिया, जिससे उसको पूरा विश्वास हो जाए। टोकरी में लेटी हुई लड़की को देखकर शर्मा की खुशी का ठिकाना न रहा। उसने समझा कि अब उसकी वला टल गई। उसने चौकीदार की होशियारी को बहुत सराहा और कहा -"शाबाश भाई ! तुमने जो कुछ किया वह और किसी से नहीं हो सकता था। अब तुम इस टोकरी को ले जाओ और चुपके से गङ्गा जी में बहा दो। लौटकर अपना इनाम ले लो। मैं यही तुम्हारी राह देखता रहूँगा ।

चौकीदार दौड़ता गया और उस टोकरी को गङ्गा की धार में रख आया। शर्मा ने

उसे इनाम दिया और वह खुशी-खुशी चला गया। शर्मा की छाती पर से एक पहाड़ सा हट गया। वह निश्चिन्त होकर घर लौटा और सुख से रहने लगा।

कुछ दिन के बाद शर्मा के माता-पिता उसके लिए एक योग्य लड़की की खोज करने लगे। एक जगह एक अच्छी लड़की मिली; लेकिन ठीक ब्याह के पहले ही उस लड़की की माँ बीमार पड़ गई। इसलिए ब्याह रुक गया। इसके बाद और एक जगह विवाह की बात पक्की हुई; पर कन्या के पिता जब बर को देखने आए, तो अचानक किसी भयङ्कर रोग से चल बसे। इस तरह उस बार भी ब्याह रुक गया। अब कोई शर्मा को अपनी लड़की देने को राजी न होता था। आखिर शर्मा के माँ-बाप ने रुपए का लालच देकर एक गरीब ब्राह्मण की कन्या से विवाह की बात पक्की की। लेकिन ठीक ब्याह के दिन उस लड़की को साँप ने डस लिया और वह मर गई।

जब चारों ओर यह बात फैल गई कि शर्मा में कोई कुलच्छन है जिससे जो उसको कन्या देना चाहता है, उसके सिर पर कोई ना कोई सङ्कट आ पड़ता है। इसलिए अब कोई उसको अपनी लड़की देने को तैयार न होता था। शर्मा के माँ-बाप मन ही मन चिन्ता से घुलने लगे। उन्हें पूरा विश्वास हो गया कि शर्मा का ब्याह देखने का सौभाग्य उनकी तकदीर में नहीं है। यह सब देखकर शर्मा बहुत उदास हो गया।

एक दिन वह अपने माँ-बाप की आज्ञा लेकर तीर्थ यात्रा करने चल पड़ा। थोड़े दिनों में वह घूमते घूमते काशी जा पहुँचा ।

एक दिन वह काशी क्षेत्र में घूम रहा था। अचानक जोर से पानी बरसने लगा। दम भर में शर्मा के सारे कपड़े भीग गए। वह जाड़े से ठिठुरता हुआ पास के एक घर के बरामदे में जाकर खड़ा हो गया। थोड़ी देर में घर का मालिक खा-पीकर बरामदे में आया तो एक कोने में दुबके हुए शर्मा पर उसकी नजर पड़ी। उसे उस पर दया आ गई। उसने उसे अन्दर बुलाकर बड़े प्रेम से खिलाया पिलाया।

उस घर के मालिक की एक सयानी लड़की थी। वह उसे लड़की के लिए भर ढूँढ रहा था। शर्मा को देखते ही वह सोचने लगा कि अगर इसके साथ लड़की का ब्याह हो जाए तो कितना अच्छा हो ! लड़का देखने में सुन्दर था। पढ़ा लिखा और सज्जन मालूम होता था। इससे ज्यादा और चाहिए क्या ?

इसलिए बातचीत के सिलसिले में उसने शर्मा के माता-पिता, घर-वार, जमीन जायदाद की हालत भी जान
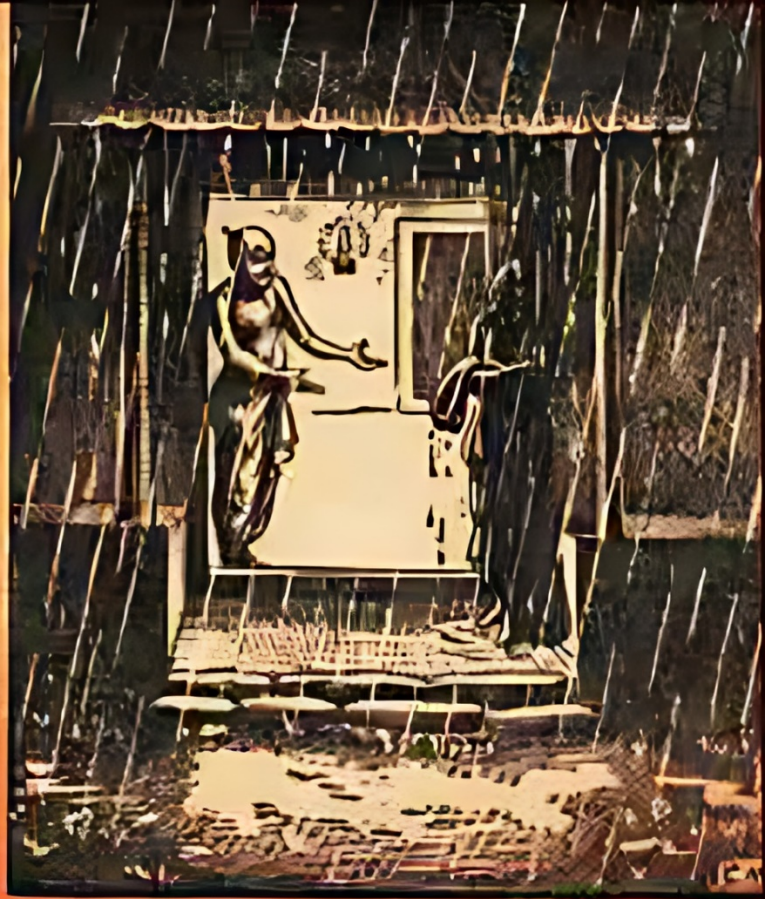
ली। अन्त में उसने अपने मन की बात उसे बता दिया।

शर्मा को इससे बढ़कर और क्या चाहिए था ! वह बेचारा तो निराश हो चला था कि अब इस जन्म में उसका ब्याह होने वाला नहीं। इसलिए वह तुरन्त राजी हो गया। शुभ मुहूर्त में शर्मा का अन्नपूर्णा से (उस लड़की का नाम अन्नपूर्णा था) ब्याह हो गया।

ब्याह हो जाने के बाद कुछ दिन तक शर्मा ससुराल में रहा। एक दिन उसे उस घर के पिछले कमरे में बाँस की एक टोकरी दिख पड़ी। उसे देखते ही शर्मा के पेट में

खलबली मच गई। उसने तुरन्त जाकर अपने ससुर से पूछा -"ससुर जी ! यह बाँस की टोकरी आपको कहाँ से मिली ?" तब उसके ससुर ने कहा -"बेटा ! यह कोई मामूली टोकरी नहीं है। वह भगवान की देन है। बहुत दिनों तक हमारे यहाँ कोई सन्तान न थी। तब हमने देवी अन्नपूर्णा की पूजा की। एक रात देवी ने तुम्हारी सास को सपने में दर्शन देकर कहा -'थोड़े ही दिनों में तुमको एक लड़की मिल जाएगी। तुम उसे लड़की को मेरा नाम दे देना। ' उसके कुछ ही दिनों बाद एक दिन में गङ्गा में नहा रहा था। इतने में एक बाँस की टोकरी बहती हुई मेरी और आई। जब मैंने उसे खोल कर देखा तो उसमें डेढ़-दो साल की एक बच्ची मिली। मैं समझ लिया कि यह देवी की ही कृपा है। तब हमने उसका नाम अन्नपूर्णा रख दिया।और प्रेम से पाला-पोसा। वह टोकरी देवी की दया की निशानी है। इसी से हमने उसे हिफाजत से रख छोड़ा है।" इतना सुनते ही शर्मा का मन बेचैन हो गया। उसे पक्का विश्वास हो गया कि उसकी स्त्री अन्नपूर्णा हरिद्वार के चमार की लड़की ही है। अब वह क्या करे?

शर्मा ने ससुर से कुछ नहीं कहा। अब उसे अपनी स्त्री और उस घर से घृणा हो गई। वह उसी दिन आधी रात को ससुराल से भागा और अपने गाँव की ओर चला। सवेरा होते-होते वह एक धर्मशाला के नजदीक पहुँचा। वहाँ आते ही उसे जोरो का बुखार चढ़ गया वह इस धर्मशाला में रुक गया और बुखार से तड़पता हुआ एक कोने में पड़ा रहा।

उसकी स्त्री अन्नपूर्णा बहुत ही चतुर थी। वह अपने पति के मन की बात पहले ही ताड़ गई थी। उसको खूब मालूम हो गया कि पति के मन में कोई शङ्का हो गई है। इसलिए उसने तय कर लिया कि किसी न किसी उपाय से पति के मन का यह भ्रम दूर करना चाहिए।

जिस समय शर्मा ससुराल से भागा, तब अन्नपूर्णा सोई नहीं थी। वह सिर्फ सोने का बहाना कर लेट रही थी। इसलिए उसने चुपके से पति का पीछा किया। जैसे ही वह धर्मशाला में रुका, वह भी वहीं रुक गई।

अब उसने देखा कि शर्मा बुखार से छटपटा रहा है, तो उसने सारी रात जागकर पति की सेवा की। उसकी सेवा के प्रभाव से शर्मा थोड़ी दिनों में चङ्गा हो गया। लेकिन बुखार उतर जाने के बाद भी वह अन्नपूर्णा को पहचान न सका। उसे बड़ा अचरज हुआ कि यह लड़की क्यों इस तरह दिन-रात मेरी सेवा कर रही है। थोड़े ही दिनों में उसे उस लड़की से प्रेम हो गया। अब यहाँ तक नौबत आ गई कि वाह उसे देखे बिना एक पल भी नहीं रह सकता था।

जब शर्मा पूरी तरह चङ्गा हो गया, तो एक दिन उसने उसे लड़की को बुलाकर कहा कि उसके साथ ब्याह करना चाहता है। तब उस लड़की ने पूछा -"तो क्या अभी तक आपका ब्याह नहीं हुआ है ?"

"ब्याह तो हो गया है; लेकिन मैंने अपनी पत्नी को छोड़ दिया है। इसलिए मैं दूसरा ब्याह कर लेना चाहता हूँ। बोलो, तुम मुझे ब्याह करना पसन्द करोगी ?" शर्मा ने कहा।

"और कहीं आप मुझे भी छोड़ दें तो? मैं नहीं चाहती कि कोई मुझे ब्याह करके छोड़ दे।" अन्नपूर्णा ने कहा। "मैं कसम खाता हूँ कि कभी ऐसा न होगा। जब हम एक दूसरे से प्रेम करते हैं तो फिर ऐसा क्यों होगा ?" शर्मा ने जवाब दिया।

दूसरे दिन उसी गाँव के मन्दिर में दोनों का फिर से ब्याह हुआ। ब्याह हो जाने के बाद अन्नपूर्णा ने शर्मा का हाथ पड़कर हँसते हुए कहा -"मेरा भी एक ब्याह पहले ही हो चुका है। यह सुनते ही शर्मा के सिर पर मानो बिजली टूट पड़ी। उसने क्रोध से काँपते हुए गरज कर कहा -"तो यह बात तुमने पहले ही क्यों न बता दी ? क्यों इस तरह मेरा धर्म भ्रष्ट कर दिया ?तुम्हारे पहले पति का नाम क्या था ?" "उनका नाम श्रीराम शर्मा था। वह देखने में ठीक आप ही जैसे थे। वह भी आपकी ही तरह अपनी स्त्री को छोड़कर आधी रात के वक्त ससुराल से भाग निकले थे। " अन्नपूर्णा ने हँसते हुए जवाब दिया।

यह सुनते ही शर्मा ने अपनी पत्नी की तरफ गौर से देखा। तुरन्त वह उसे पहचान गया। पुरानी बातें याद आते ही उसका सिर शर्म से झुक गया उसका सारा क्रोध काफूर हो गया और वह सोचने लगा कि ऐसी स्त्री तो बड़े भाग्य से मिलती है।

उस दिन से शर्मा के मन में फिर कभी उस अछूत लड़की को छोड़ देने का ख्याल नहीं हुआ। सेवा से प्रेम पैदा हुआ और प्रेम ने घृणा को जीत लिया। दोनों खूब खुश रहने लगे। कभी-कभी बूढ़े ब्रह्मा और उसकी ब्रह्म-गाँठ की बात याद करके वह खूब हँसता और अन्नपूर्णा को भी यह कहानी सुनाता। फिर कहता -"यह ब्रह्म-गाँठ की महिमा है। "

तीन-चार साल बीत गए। वर्धमान के जहाज अब भी दूर-दूर के समुन्दरों में चलते और देश विदेश से व्यापार करते। इस व्यापार से वर्धमान को बहुत मुनाफा भी होता। लेकिन वर्धमान का मन व्यापार में न लगता था। उसके मन में देश-विदेश घूमने की इच्छा प्रबल हो उठी। उसकी पिछली यात्रा की कहानी सुनते-सुनते लोग अब ऊबने लगे थे। इसलिए वर्धमान ने फिर एक बार यात्रा करने का निश्चय कर लिया।

उसने एक अच्छे से जहाज पर थोड़ा सा माल लाद लिया। फिर एक दिन शुभ मुहूर्त में चुने गए नाविकों के साथ वह जहाज पर चढ़कर सिंहल दीप की ओर चल दिया। वहाँ पहुँचकर उसने सारा माल बेच डाला और छः महीनों के लायक रसद खरीद ली। फिर सब तरह से लैस सोकर वह वहाँ से पश्चिम की ओर चला।

पश्चिमी समुद्र का सफर बड़ा खतरनाक होता है। उस समुद्र में हमेशा आँधी तूफान उठते रहते हैं। उसमें सफर करना क्या है, जान पर खेलना है। चन्द दिनों में वर्धमान का जहाज भयङ्कर तूफानों में पड़ गया। हवा के जोर में पतवार कुछ काम न करती थी। इसलिए जहाज वालों को पता ही न था कि वह किस ओर बहे जा रहे हैं। खैर यही थी कि जहाज डूबा नहीं। इस तरह कई हफ्तों तक चलते-चलते जहाज किसी अनजान किनारे से जा लगा।

भगवान का नाम लेते हुए सब लोग जहाज से उतरकर सूखी जमीन पर जा खड़े हुए। उनको यह पता नहीं था कि वह कौन सा टापू है। यह किनारा उत्तर से दक्षिण की ओर फैला हुआ था।

वर्धमान और उसके साथियों को जोर की प्यास लगी हुई थी। वह मीठे पानी के स्रोतों और झरनों की खोज में चले। वहाँ की जमीन पथरीली थी। आसपास कहीं एक बूँद भी पानी नजर न आता था। इसलिए वे लोग एक-एक झुण्ड बनाकर चारों ओर निकल गए। वर्धमान अकेला एक और चला।

वह बहुत देर तक उन चट्टानों में भटकता रहा। उसका गला सूख गया था। लेकिन कहीं पानी के दर्शन न हुए। आखिर वह हिम्मत हार कर लौट पड़ा। शायद साथियों को पानी का पता लगा हो। लेकिन यह क्या ! किनारे पर आकर उसने देखा कि जहाज लङ्गर उठ चुका है और बड़ी तेजी से दूर समुद्र की ओर बढ़ा जा रहा है।

वर्धमान को बड़ा गुस्सा आया। क्या उसके साथी बौरा गए हैं ? क्या वह उसके साथ धोखेबाजी करना चाहते हैं ? उसको इस सुनसान जगह में छोड़कर वे क्यों इस तरह जहाज को उड़ा लिए जा रहे हैं ? वह सोच ही रहा था कि अचानक उसे एक डरावना दृश्य दिखाई पड़ा। एक भयङ्कर दैत्य समुद्र में दौड़ता हुआ उसके जहाज का पीछा कर रहा था। उसका डील-डौल देखते ही वर्धमान के होश उड़ गए। वह घबरा गया --कहीं उसने जहाज को पकड़ लिया तो ! लेकिन उसके खलासी बड़े होशियार थे। पलक झपकते ही जहाज आँखों से ओझल हो गया। आखिर वह दैत्य निराश होकर पीछे फिरा। वर्धमान डरा कि कहीं दैत्य की नजर उस पर न पड़ जाए। इसलिए वह सिर पर पैर रखकर भागा और एक चट्टान की आड़ में छुप गया।

थोड़ी देर बाद उसने झाँक कर बाहर देखा तो दैत्य कहीं दीख न पड़ा। उसे शक होने लगा कि कहीं उसकी आँखें धोखा तो नहीं दे रही है। उसने आँखें फाड़-फाड़

कर देखा जगह-जगह दस-दस बारह-बारह हाथ काँस उगी हुई थी। पास जाकर देखने पर वह मामूली मोथा ही जान पड़ा। थोड़ी दूर पर गेहूँ का एक खेत भी था। उसमें एक-एक डण्ठल चालीस-चालीस हाथ ऊँचा था। कौन कहता कि वह गेहूँ है ! खेत के बीचों बीच एक लम्बी-चौड़ी सड़क गई थी। वह उसी सड़क से चलने लगा। थोड़ी दूर जाने पर उसे काँटों का एक घेरा दिखाई दिया। वह घेरा तिमञ्जिले मकान के जितना ऊँचा था। उस घेरे में एक जगह टट्टी सी लगी हुई थी। उसकी दूसरी तरफ एक और खेत था। वर्धमान उस घेरे को फाँद तो नहीं सकता था। इसलिए उसने उसमे से घुसकर जाने की सोची। इतने में उसे पीछे कुछ आहट सुनाई पड़ी। वर्धमान ने पीछे मुड़कर देखा तो उसे एक वैसा ही भयङ्कर दैत्य (जैसा कि उसके जहाज को पकड़ने जा रहा था) दिखाई दिया। उसे देखते ही उसके होश गुम हो गए। वह वहीँ पौधों की आड़ में छुपा रहा।

वह दैत्य उस टट्टी के पास आया और थोड़ी देर तक खड़ा उस खेत की तरफ देखता रहा। फिर उसने पीछे मुड़कर किसी को पुकारा। वर्धमान को ऐसा लगा मानो बादल गरज रहा हो। इतने में वैसे ही बहुत से दैत्य हाथों में हँसिए लिए वहाँ आ पहुँचे। जिसने उन्हें पुकारा था वह एक किसान था। यह लोग उसके मजदूर थे। किसान ने खेत काट लेने का हुक्म दिया।

टट्टी हटाकर वे खेत में आए और फसल काटने लगे। वर्धमान की जान में जान न थी। उन हँसियों को देखते ही उसके बदन में कँपकँपी पैदा हो गई। अब उसकी जान कैसे बच सकेगी ! किस तरह वह इन दैत्यों के हाथ से बचकर भाग सकेगा?

वर्धमान खेत के एक कोने से दूसरे कोने में छिपा फिरता था जिससे वह उन भयङ्कर पैरों के नीचे कुचला न जाए या हँसियों से काटा न जाए। लेकिन वह कहाँ तक छिपता ? अन्त में वह एक ऐसी जगह जा फँसा जहाँ से इधर-उधर खिसकने का कोई रास्ता न था। जब एक मजदूर का हँसिया उधर लप-लपाने लगा, तब वह जोर से चिल्ला उठा।

उस मजदूर ने जब झींगुर सी आवाज सुनी, तो उसने हँसिया रोक ली और इधर-उधर देखने लग गया। आखिर वर्धमान पर उसकी नजर पड़ी। वह अचरज से आँखें फाड़ फाड़ कर उधर देखने लगा।वह वर्धमान को बड़ी सावधानी से उठाकर अपनी आँखों के नजदीक ले गया और गौर से देखता रहा। आखिर वह उसे अपनी पगड़ी की तह में छुपा कर अपने मालिक के पास ले गया। "मालिक ! जरा इधर तो देखिए, यह क्या है ! कितना नन्हा आदमी ! ठीक हमारे अंगूठे जितना। और देखिए तो, हमारी तरह इसके भी हाथ पैर सब कुछ हैं।" उस मजदूर ने अपने मालिक से जाकर कहा।

"अरे ! तू पागल तो नहीं हो गया है। क्या बक रहा है ? जा ! अपना काम देख।" मलिक ने डाँट कर कहा। लेकिन जब उस मजदूर ने अपनी पगड़ी की तह से वर्धमान को निकाला, तो उसके अचरज का कोई ठिकाना न रहा। अब तक अनेक लोग वहाँ आकर खड़े हो गए थे। वे सब आपस में कहने लगे -"ऐसी अजीब चीज तो हमने कभी नहीं देखी थी।" वर्धमान को बीच में रखकर वे सब उसके चारों ओर बैठकर देखने लगे कि वह क्या करता है। वर्धमान बेचारा न समझ सका कि वे लोग उसके बारे में क्या बातें

कर रहे हैं। उसने गिड़गिड़ाते हुए कहा -"मुझे मारो मत ! मैं भी तुम्हारे जैसा ही एक आदमी हूँ। मुझ पर दया करो। मुझे मारो मत।"

उन दैत्यों को यह देखकर बड़ी खुशी हुई कि यह नन्हा आदमी भी उन्हीं की तरह बोलता है। उसकी बातें उनकी समझ में नहीं आई; लेकिन उसके भाव तो वह समझ ही गए। उस किसान ने उन मजदूरों को अपने-अपने काम पर लगा दिया और खुद वर्धमान को रुमाल में लपेटकर घर ले गया। वह इसे अपने घर वालों को दिखाना चाहता था।

किसान जब घर पहुँचा तो भोजन का समय हो गया था। उसने वर्धमान को जेब से निकाल कर अपनी स्त्री को दिखाया। उसको देखते ही वह चौंक कर भय से चिल्ला उठी।

"देखने में नन्हा सा है। लेकिन गौर से देखने पर पता चलता है कि यह ठीक हमारी ही तरह का आदमी है। डरने की कोई बात नहीं है। लो, हाथ में लेकर देखो।" यह कहते हुए किसान ने वर्धमान को स्त्री के हाथ में रख दिया।

उसकी स्त्री ने कुछ इशारे किए। जब उसने जान लिया कि वर्धमान यह इशारे समझ गया, तो उसे बड़ी खुशी हुई। किसान, किसान की स्त्री, बाल-बच्चे और बूढी दादी सभी उसे अपने बीच में रखकर भोजन करने बैठे। उन्होंने वर्धमान के आगे भी एक दो दाने रख दिए। जब वह दोनों हाथों से उन दोनों को उठाकर बड़ी आसानी से काट काट कर खाने लगा, तो उन्हें इतनी हँसी आई कि वह ठीक से खाना भी ना खा सके।

[संशेष]

CHANDAMAMA (Hindi) December '49 Regd. No. M. 5452